

स्तंभों के मुख्य विषयों में से एक है नेतृत्व, और नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण भूमिका है अपनी टीम का प्रबंधन करना।

जब हम नेतृत्व की बात करते हैं, तो हम अक्सर दृष्टि, विश्वास और रचनात्मकता की बात करते हैं—और ये सभी बातें निश्चित रूप से महत्वपूर्ण हैं।

लेकिन जब आप अपनी टीम का नेतृत्व कर रहे होते हैं, तो लोगों का प्रबंधन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

यीशु ने हमें यह दिखाया कि उन्होंने अपनी टीम—अपने 12 चेलों—का प्रबंधन कैसे किया। और यह मॉडल हमारे लिए लूका अध्याय 9 में मिलता है। हम उन सात चरणों को देखेंगे जो यीशु ने अपनी टीम का प्रबंधन करते समय अपनाए, ताकि हम भी अपनी टीमों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना सीख सकें।

यह मॉडल लूका 9:1-2 से शुरू होता है: “जब यीशु ने बारहों को बुलाया, तो उसने उन्हें सब दुष्टात्माओं पर अधिकार और रोगों को चंगा करने की शक्ति दी। और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और रोगियों को चंगा करने के लिए भेजा।”

यीशु ने अपने सभी चेलों को एकत्र किया और जब उन्होंने उन्हें भेजा, तो उन्होंने उन्हें इस तरह भेजा कि वे परमेश्वर पर निर्भर रहें। उन्होंने उन्हें अधिकार और शक्ति दी, लेकिन उन्हें भरोसा करना था कि परमेश्वर कार्य करेगा।

वह उनसे ऐसा कार्य करने को कह रहे थे जो उनकी क्षमता से परे था।

हमें यह समझना चाहिए कि अपनी टीम का प्रबंधन करते समय हमारा कार्य केवल उनका आत्म-विश्वास बढ़ाना नहीं है ताकि वे स्वयं को सक्षम महसूस करें, बल्कि उनका परमेश्वर पर भरोसा बढ़ाना है।

अक्सर एक नेता के रूप में हम लोगों को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, उन्हें उत्साहित करना चाहते हैं, और हम उन्हें अपने शब्दों से uplift करते हैं—और यह ठीक है।

लेकिन मैं आपको सावधान करना चाहता हूँ कि यदि आप अपना अधिकतर समय लोगों को उनकी अपनी क्षमता में विश्वास दिलाने में लगाते हैं, तो वे स्वयं पर निर्भर होने लगते हैं।

यीशु ने शुरुआत की इस बात से कि उनके चले परमेश्वर पर भरोसा करना सीखें।

हमें भी अपनी टीम को इस दिशा में ले जाना है कि वे स्वयं पर नहीं, परमेश्वर पर अधिक भरोसा करें।

पुराने नियम में एक कहानी है जहाँ परमेश्वर मूसा को इस्राएलियों को मुक्त करने के लिए बुलाता है। मूसा का उत्तर होता है: “मैं यह नहीं कर सकता।”

और आप सोचेंगे कि परमेश्वर मूसा को प्रोत्साहित करेगा, उसे आत्म-विश्वास देगा और कहेगा, “तुम कर सकते हो, मूसा।”

लेकिन परमेश्वर ऐसा नहीं करता।

परमेश्वर बस इतना कहता है: “मैं तेरे साथ रहूँगा।”

एक नेता के रूप में, जब हम अपनी टीम का प्रबंधन करते हैं, तो हमें उन्हें उस स्थान तक ले जाना चाहिए जहाँ वे इस बात पर भरोसा करें कि परमेश्वर उनके साथ है—उस भूमिका में जिसे उन्हें निभाना है।

और अपनी टीम में विश्वास निर्माण करने का सबसे अच्छा तरीका है अनुभव।

हमें उन्हें उसी तरह स्थित करना है जैसे यीशु ने चेलों को किया—जहाँ वे कुछ ऐसा कर रहे हों जो उनकी क्षमता से थोड़ा अधिक हो।

इसमें बुद्धिमत्ता की आवश्यकता है।

लेकिन अक्सर एक नेता के रूप में हम अपनी टीम को ऐसे जोखिम भरे क्षणों से बचाते हैं—जहाँ उन्हें अपने आराम क्षेत्र से बाहर जाना पड़े।

यीशु ने शुरुआत की अपनी टीम को उस स्थान पर ले जाकर जहाँ उन्हें पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर होना पड़े।

फिर वह आगे बढ़ते हैं।

लूका 9:3 में देखें: “यात्रा के लिए कुछ न लेना—न लाठी, न थैला, न रोटी, न पैसा, न अतिरिक्त कपड़ा।”

वह उन्हें भेजते हैं।

उन्हें परमेश्वर पर निर्भर बनाते हैं।

फिर उन्हें स्पष्ट निर्देश देते हैं।

यह उनके नेतृत्व प्रबंधन मॉडल का दूसरा चरण है—कि जब आप किसी टीम का नेतृत्व कर रहे हों, तो आपको उन्हें स्पष्ट दिशा देनी चाहिए।

अक्सर जब हम किसी टीम का नेतृत्व कर रहे होते हैं और टीम वैसा कार्य नहीं कर रही होती जैसा हम चाहते हैं,

तो हम निराश हो जाते हैं।

हमें लगता है कि वे आलसी हैं। लेकिन वास्तव में वे लोग आलसी नहीं हैं। वे बस भ्रमित हैं। उन्हें स्पष्ट निर्देश नहीं दिए गए हैं।

और यहाँ यीशु बहुत स्पष्ट हैं। वह उन्हें बताते हैं कि क्या लेना है, कहाँ जाना है, और क्या करना है।

इन स्पष्ट निर्देशों के साथ चले आगे बढ़ सकते हैं।

अपनी टीम का सबसे अच्छा प्रबंधन करने का तरीका है यह सुनिश्चित करना कि आप उन्हें स्पष्ट निर्देश दे रहे हैं।

और यह जानने का सबसे अच्छा तरीका कि आपके निर्देश स्पष्ट हैं, यह है कि सबसे पहले—अपने निर्देशों को संक्षिप्त रखें।

कभी-कभी हमारे निर्देश बहुत अधिक शब्दों में होते हैं और वह उलझ जाते हैं, जिससे लोग प्राथमिकताओं को नहीं समझ पाते।

स्पष्टता का अर्थ है संक्षिप्तता।

इसके अलावा, आप यह भी जान सकते हैं कि आप स्पष्ट हैं या नहीं—जब आप अपनी टीम से कहें कि वे आपके दिए गए निर्देशों को दोहराएँ।

जब आप सुनते हैं कि वे आपके निर्देशों को कैसे दोहराते हैं, तो आप जान पाएँगे कि आपने स्पष्टता दी है या नहीं।

यीशु का नेतृत्व और प्रबंधन मॉडल स्पष्ट निर्देश देने में विश्वास रखता है।

लेकिन फिर वह आगे बढ़ते हैं।

लूका 9:4-5 में लिखा है: “जिस किसी घर में प्रवेश करो, वहाँ तब तक रहो जब तक उस नगर से बाहर न निकलो।

और यदि लोग तुम्हारा स्वागत न करें, तो उस नगर से बाहर निकलते समय अपने पैरों की धूल झाड़ दो, उनके विरुद्ध गवाही के रूप में।” यह यीशु के नेतृत्व मॉडल का एक बहुत ही रोचक भाग है।

वह चेलों को गाँवों में भेज रहे हैं।

उन्हें स्पष्ट निर्देश दे रहे हैं।

लेकिन फिर वह कहते हैं—जब तुम वहाँ पहुँचो और असफलता हो,

तो वह उन्हें यह कहानी बताते हैं कि जब कुछ गलत हो जाए तो उन्हें कैसे प्रतिक्रिया देनी है।

यीशु वह कर रहे हैं जिसे मैं “सच्चाई बताना” कहता हूँ।

वह एक ऐसी कहानी बना रहे हैं जिसमें चले खुद को देख सकें।

अक्सर एक नेता के रूप में, जब हम टीम का प्रबंधन करते हैं,

तो हम केवल सकारात्मक बातें करते हैं—भविष्य की, सुंदरता की, सफलता की—

और हम उन्हें उन कठिनाइयों के लिए तैयार नहीं करते जो वे सामना करने वाले हैं।

हम उन्हें थोड़ा भोलेपन या आदर्शवाद के साथ भेज देते हैं।

लेकिन यीशु वास्तव में उन्हें यह समझ देते हैं कि हर चीज़ सफल नहीं होगी।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रबंधन सिद्धांत बन जाता है।

हमें यह पुनः परिभाषित करना होगा कि हम असफलता के बारे में कैसे बात करते हैं।

असफलता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो कभी नहीं होगी।

असफलता हमेशा बुरी नहीं होती।

असफलता, संघर्ष, चुनौतियाँ—ये सेवकाई का हिस्सा हैं।

और अगर हम अपने लोगों को इस वास्तविकता के लिए तैयार कर सकें कि उन्हें कुछ संघर्षों का सामना करना पड़ेगा,

तो जब वे असफलता का सामना करेंगे, तो वे बेहतर प्रतिक्रिया देंगे।

हमें असफलता की धारणा को उसी तरह पुनः परिभाषित करना होगा जैसे यीशु ने अपने चेलों के साथ किया,
ताकि जब वे बाहर जाएँ, तो वे तैयार हों और उनकी अपेक्षाएँ संतुलित हों।

यीशु यहीं नहीं रुकते।

लूका 9:6 में लिखा है: इसलिए वे निकल पड़े और गाँव-गाँव जाकर शुभ समाचार सुनाते और हर जगह लोगों को चंगा करते रहे।” यीशु का प्रबंधन तरीका कभी भी किसी को अकेले भेजना नहीं था।

उन्होंने कभी अपनी टीम को अलग-थलग नहीं रखा।

उन्होंने हमेशा उन्हें कम से कम जोड़ी में भेजा।

उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि वे अकेले निर्णय लेने की कोशिश में न उलझें।

जब आप अपनी टीम का प्रबंधन करते हैं—चाहे आपकी टीम 10 लोगों की हो, 12 की हो या उससे अधिक

—

उन्हें केवल एक टीम के रूप में न देखें और न ही केवल व्यक्तिगत रूप में।

बल्कि उन्हें जोड़ी के रूप में देखें, जिन्हें एक साथ भेजा जा सकता है ताकि वे मिलकर कार्य करें।

एक अच्छे नेता की भूमिका में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपका नेतृत्व केवल आपकी महानता से नहीं, बल्कि इस बात से मापा जाता है कि आप लोगों को एक-दूसरे से कैसे जोड़ते हैं।

नए नियम में इसके उदाहरण मिलते हैं।

नए नियम के सबसे अच्छे नेताओं में से एक था बरनबास।

बरनबास पर कोई नेतृत्व पुस्तकें नहीं लिखी गई हैं।

लेकिन प्रेरितों के काम में लिखा है कि बरनबास गया और उसने शाऊल (जो बाद में पौलुस बना) को लिया, और उसने प्रेरितों को लिया, और उन्हें एक साथ लाया।

वह एक जोड़ने वाला था।

उसे पता था कि परमेश्वर की सेवकाई को आगे बढ़ाने के लिए इन दो समूहों को एक साथ लाना आवश्यक है।

अगर आप एक अच्छे नेता बनना चाहते हैं जो अपनी टीम का प्रभावी प्रबंधन करता है,

तो आपको यह जानना होगा कि किसे किससे जोड़ना है,

ताकि जब वे एक साथ जाएँ, तो वे फलदायी हों। फिलिप एक और महान नेता था जिसे हम अक्सर नेतृत्वकर्ता के रूप में नहीं देखते।

क्योंकि फिलिप एक आमंत्रक था। वह हमेशा लोगों को शामिल करता था।

एक अच्छे प्रबंधक होने का अर्थ है—सही लोगों को सही टीमों में आमंत्रित करना।

अक्सर जब सेवकाई में संघर्ष होता है, तो उसका कारण यह होता है कि हमने लोगों का प्रभावी नेतृत्व नहीं किया,

और हमने उन्हें सही समूहों में नहीं रखा।

यीशु केवल चेलों को भेजते नहीं हैं।
वह उन्हें विशिष्ट टीमों में भेजते हैं।

यह उनका नेतृत्व है जो वह हमें एक प्रबंधक के रूप में देते हैं।
वह उन्हें परमेश्वर पर भरोसा करना सिखाते हैं।
उन्हें स्पष्ट निर्देश देते हैं।
उन्हें संभावित कठिनाइयों और संघर्षों की तस्वीर दिखाते हैं।
उन्हें टीमों में भेजते हैं।
और फिर भी वह यहीं नहीं रुकते।

लूका 9:10 को देखें: “जब प्रेरित लौटे, तो वे गाँवों में गए, उन्होंने वह सेवकाई की जो उन्हें सौंपी गई थी, और फिर वे यीशु के पास लौटे।”

पद 10 कहता है कि जब वे लौटे, तो उन्होंने यीशु को बताया कि उन्होंने क्या किया।

“तब वह उन्हें अपने साथ ले गया और वे अकेले एक नगर में चले गए जिसका नाम था बैतसैदा।” ध्यान से देखें कि यीशु अपनी टीम के ऊपर नेतृत्व कैसे करते हैं।

वे बाहर जाते हैं और अपना कार्य करते हैं—जैसे आपकी टीम बाहर जाती है और वे वह कार्य करती हैं जो आपने उन्हें सौंपा है।

लेकिन जब वे लौटते हैं और रिपोर्ट देते हैं,
यीशु तुरंत आगे नहीं बढ़ते।

वह समझते हैं कि यह एक विशेष क्षण है—प्रशिक्षण का, शिक्षण का, मार्गदर्शन का।
ध्यान से देखें कि यीशु इस डिब्रीफ (पुनरावलोकन) क्षण को कैसे प्रबंधित करते हैं।
वह तुरंत ऐसा नहीं करते।

वह प्रतीक्षा करते हैं।

क्यों प्रतीक्षा करते हैं?

क्योंकि अक्सर एक नेता के रूप में हम उत्साह और भावनात्मक क्षणों में ही सिखाने और मार्गदर्शन करने की कोशिश करते हैं।

और आमतौर पर जब कोई परियोजना चल रही होती है,
तो भावनाएँ बहुत तीव्र होती हैं।

तनाव बहुत अधिक होता है।

और यीशु जानते हैं कि यदि मेरे चले नेतृत्व और सेवकाई में बढ़ने वाले हैं,
तो मुझे उनसे तब बात करनी होगी जब वे भावनात्मक रूप से शांत हों।

इसलिए वह प्रतीक्षा करते हैं।
वह केवल प्रतीक्षा नहीं करते—वह उन्हें अलग ले जाते हैं।
वे बैतसैदा नामक गाँव में चले जाते हैं।
इस प्रकार वे उस सेवकाई की स्थिति से बाहर आ जाते हैं।

इस मॉडल में एक महत्वपूर्ण बात है—
यदि हम अपनी टीमों का अच्छा प्रबंधन करना चाहते हैं, तो हमें उनके अनुभव के आधार पर उन्हें प्रशिक्षित करने और सिखाने के लिए समय निकालना होगा।
लेकिन हमें प्रतीक्षा करनी होगी।
कभी-कभी हमें उन्हें उस स्थिति से हटाना होगा।

और फिर यीशु उनसे चर्चा करते हैं।
वे केवल ईमेल से रिपोर्ट नहीं लेते।
वह उनके साथ बैठते हैं।
उनसे बात करते हैं।
उनसे प्रश्न पूछते हैं।

और वह इस विशेष क्षण का उपयोग उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए करते हैं।

एक ऐसा नेता बनिए जो अपनी टीम को बार-बार एकत्र करता है,
उन्हें अलग ले जाता है,
उनसे प्रश्न पूछता है।

और डिब्रीफ केवल यह न हो कि कार्यक्रम सफल था या नहीं।
बल्कि यह डिब्रीफ हो—जहाँ आप उन्हें उनके नेतृत्व, उनके वरदानों, और परमेश्वर में उनके विश्वास के बारे में सिखा रहे हों।

अक्सर हम कार्यक्रमों में इतने व्यस्त होते हैं कि हम एक कार्यक्रम से दूसरे कार्यक्रम, एक आयोजन से दूसरे आयोजन में चले जाते हैं।
और हम वह समय नहीं लेते जो यीशु ने लिया।

आपको इसे प्राथमिकता देनी होगी।
केवल तब डिब्रीफ करना आसान होता है जब कोई समस्या हो।
लेकिन हमारी टीमों के साथ नेतृत्व में डिब्रीफिंग एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए—
क्योंकि यह हमें अपनी टीम में बोलने और उनके विकास का मार्गदर्शन करने का अवसर देती है।

यीशु अभी भी समाप्त नहीं हुए हैं।
लूका 9:13 में हम एक और कहानी में प्रवेश करते हैं,

लेकिन यह उसी प्रक्रिया का हिस्सा है जो हमें सिखाई जा रही है।

यह वह क्षण है जब हजारों लोग वहाँ होते हैं।
और यीशु चेलों की ओर देखते हैं और कहते हैं:
“तुम उन्हें भोजन दो।”

आप देख सकते हैं कि वह उन्हें विकास के अगले चरण में ले जा रहे हैं—
विश्वास के अगले स्तर पर—
जहाँ वे अध्याय की शुरुआत में थे, उससे आगे।

लूका 9:13 में लिखा है: “यीशु ने उन्हें उत्तर दिया। वे उसके पास आए और बोले, ‘हमारे पास पर्याप्त भोजन नहीं है। हमारे पास पर्याप्त धन नहीं है। यहाँ हजारों लोग हैं।’
और यीशु उनकी ओर देखते हैं और कहते हैं, ‘तुम उन्हें कुछ खाने को दो।’” यीशु चेलों की वृद्धि को चुनौती दे रहे हैं—सिर्फ गाँव जाकर सुसमाचार सुनाने से लेकर अब एक चमत्कार का हिस्सा बनने तक।

अक्सर एक नेता के रूप में हम यह गलती करते हैं कि हम अपने लोगों को वहीं बनाए रखते हैं जहाँ वे हैं।
अगर वे अच्छा कर रहे हैं, अच्छा कार्य कर रहे हैं, तो हम उन्हें उसी स्थिति में बनाए रखते हैं।

लेकिन यीशु ने कभी ऐसा नहीं किया।

उनका टीम प्रबंधन हमेशा उन्हें आगे बढ़ाने का था।
वे जहाँ भी थे, वहाँ से आगे बढ़ने का एक और कदम था।
और जब वे उस कदम में आगे बढ़ते, तो एक और अगला कदम होता।

यीशु ने चेलों को यह नहीं बताया कि उनका जीवन और सेवकाई 20 कदम आगे कैसी दिखेगी।
उन्होंने यह नहीं बताया कि वे पवित्रशास्त्र के लेखक बनेंगे।
उन्होंने यह नहीं बताया कि वे परमेश्वर के राज्य में स्तंभ बनेंगे।
उन्होंने यह नहीं बताया कि उनमें से अधिकांश अपने विश्वास के लिए शहीद होंगे।

उन्होंने बस इतना कहा: “यह रहा तुम्हारा अगला कदम।”

हम दो प्रकार की चरम सीमाओं में चले जाते हैं:
या तो हम उन्हें वहीं बनाए रखते हैं जहाँ वे हैं—स्थिति को बनाए रखते हैं—
लेकिन फिर वे मसीह के लिए और आपके कार्य में वह सब नहीं बन पाते जो वे बन सकते हैं।

या फिर हम उनके लिए इतनी दूर की तस्वीर बना देते हैं कि वह असंभव या समझ से बाहर लगती है।

हमें यीशु के मॉडल का अनुसरण करना चाहिए—जो उन्हें वहाँ से उठाकर अगले कदम तक ले जाते हैं।
गाँव जाकर सुसमाचार सुनाने से लेकर—“अब तुम उन्हें भोजन दो।”

एक नेता के रूप में, जब आप अपनी टीम का प्रबंधन कर रहे होते हैं, तो आपको यह प्रश्न पूछना चाहिए:

“उनका अगला विकास चरण क्या है?”

“उनकी अगली वृद्धि की दिशा क्या है?”

“मैं उन्हें उस अगले चरण के लिए कैसे तैयार करूँ?”

लूका अध्याय 9 में, और मैं आपको इसे गहराई से अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ, हमें यीशु के नेतृत्व और प्रबंधन का एक पैटर्न मिलता है।

यह हमें एक उदाहरण और मॉडल के रूप में दिया गया है—जिससे हम अपनी टीम का प्रबंधन कर सकें।

और हम एक आत्म-मूल्यांकन कर सकते हैं:

क्या हम यीशु के अनुरूप हैं?

- उन्होंने चेलों को परमेश्वर पर भरोसा करना सिखाया—उस कार्य में जो उन्हें सौंपा गया था।

क्या हम उन्हें बहुत अधिक आत्म-निर्भर बना रहे हैं?

क्या हमें उन्हें उस स्थान पर पुनः स्थापित करना चाहिए जहाँ उन्हें अपनी भूमिका के लिए परमेश्वर पर भरोसा करना पड़े?

- फिर यीशु ने उन्हें अत्यंत स्पष्ट निर्देश दिए।

क्या आपके निर्देश स्पष्ट हैं?

क्या आपकी टीम उन्हें दोहरा सकती है?

- फिर जब वह उन्हें बता रहे थे कि क्या होने वाला है,

उन्होंने सच्चाई बताई—कुछ ऐसे परिदृश्य जो बहुत सकारात्मक नहीं थे—

क्योंकि वह चाहते थे कि वे पूरी तरह तैयार हों।

उन्होंने ईमानदारी से एक कहानी चित्रित की जिसमें वे खुद को देख सकें।

क्या आप भी ऐसी सच्चाई बताते हैं जिससे आपकी टीम आप पर अधिक भरोसा करे और बेहतर रूप से तैयार हो?

- फिर उन्होंने उन्हें टीमों में रखा।

और उन्हें पता था कि नेतृत्व की भूमिका का एक भाग है—सही लोगों को एक-दूसरे से जोड़ना,

ताकि वे टीम के रूप में सफल हो सकें।

लेकिन यीशु के मॉडल का अंतिम भाग हमारे लिए सबसे कठिन होता है—

अपनी टीम के साथ समय निकालना, उन्हें अलग ले जाना, प्रश्न पूछना, उनके अनुभव को समझना, उन्हें कोच करना, और उन्हें अधिक करने के लिए सिखाना।

क्या आप अपनी टीम के लिए ऐसा समय बना रहे हैं?

क्योंकि उसी डिब्रीफ क्षण में आप सबसे अच्छी तरह समझ पाते हैं कि उनका अगला विकास चरण क्या है—

जैसा कि यीशु ने चेलों से कहा, “अब तुम उन्हें भोजन दो।”

लूका 9 का यह पैटर्न यीशु के नेतृत्व का पैटर्न है,
लेकिन यह पद 13 पर समाप्त नहीं होता।

अध्याय के अंत में, वास्तव में, यीशु चेलों से एक बातचीत करते हैं।

लूका 9:18 में लिखा है: “एक बार यीशु अकेले प्रार्थना कर रहे थे और उनके चेले उनके साथ थे।

और उन्होंने उनसे पूछा, ‘भीड़ मुझे क्या कहती है?’

फिर उन्होंने पूछा, ‘पर तुम मुझे क्या कहते हो?’” यीशु का लूका 9 मॉडल समाप्त होता है—अपने चेलों को स्वयं के साथ एक गहरी पहचान और जागरूकता की ओर इंगित करते हुए।

एक नेता के रूप में, जो यीशु के मॉडल का अनुसरण करता है,

हम कभी-कभी इतने कार्य-केंद्रित हो जाते हैं—

कि हमारी टीम क्या कर रही है, कौन-से कार्यक्रम चला रही है—

कि हम इस अंतिम भाग को भूल जाते हैं।

कि हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है—अपनी टीम को यीशु की ओर इंगित करना।

“तुम मुझे क्या कहते हो?”

क्योंकि जब हमारी टीम इस पूरे मॉडल का अनुसरण करते हुए

यीशु पर अधिक निर्भर होती है,

यीशु को अधिक जानती है,

यीशु के करीब आती है—

तो वे न केवल अपने व्यक्तिगत विकास के लिए तैयार होते हैं,

बल्कि उस सेवकाई के लिए भी तैयार होते हैं जिसमें परमेश्वर उन्हें आपके साथ उपयोग करना चाहता है।

लूका 9 एक अद्भुत मॉडल है—जो यीशु हमें देते हैं कि हमें अपनी टीमों का नेतृत्व और प्रबंधन कैसे करना चाहिए।

इस मॉडल का अनुसरण कीजिए, और आप अपनी सेवकाई और अपने लोगों में परमेश्वर की फलदायीता को देखेंगे।